

हं नमः शिवाय ॥ श्रीमत्पञ्चतन्त्रकथनम् ॥ नानाधातुविद्यादिकं ॥ नानाद्रुमसम
 कोटि ॥ नानाप्रयत्नविद्यादिकं ॥ नानाप्रयत्नविद्यादिकं ॥ नानाप्रयत्नविद्यादिकं ॥ नानाप्रयत्नविद्यादिकं ॥
 समनादविद्यासिक्तानां नादद्वयरुत्तायकस्य द्वादशीतमस्य लेख
 किन्तु यमधुनां गीतं मन्त्रवाच्यं हस्तसंस्कृतं ॥ सिद्धविद्याध्वजनाह्वयं ॥ गंधर्वकविना दिव्य
 अनिरुद्धीकृतं त्रैलोक्यसंगतं सविनोक्तं ॥ वाधिसत्त्वगलेष्वाची ॥ दशरुमिष्यते ॥

II-8

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

नपि। ज्ञायतां। दिशि। दयोः। विद्यायाः। सद्सुः। शकाध्यायः। गेहोचोः। दयशी।
 वादि। दिवः। सवसत्वादिना। युक्ता। रुवात्रव। लाकिनः॥ विडा। हननः॥ धीमानः। य
 द्गगहसुनलिः॥ मदनाकयस्य। युक्ता। मेत्याचक्रययाचिः॥ धिमादिदशकिशादेः॥ १
 महर्षादवपर्यादिः। नृणां। विदुः। मायाम्। तदयमिह। सदावतः॥ पलमक्रययः॥ ४५
 यद्वसावसाकिर्नः। नसुनावरसिदिनिः। गडायाद्यां। वृसंकटः॥ सादेत्वाभिगुनसत्ताः॥

मन्मसंसावसावः। तदाः। संसात्रिकेः॥ पाहोः। नागधयमाहमयः॥ मूचानः। जननं सत्तास
 तावुः। दिमदमनः॥ नवमूकेः। डगनाथः॥ सधीमानः। तलाकिनः॥ डवाचमः। युवावाही। तद
 याहिः॥ यवाधिनीः॥ इष्टुगुशकयादन्तः। अमिनारुस्यनामिनः॥ पक्षिधनवहान्यत्राम
 माहे। लाकमानः॥ मदाकः। नृक्षयनाः। डाटाइक्षवः। हाधुना। डदिनादिलसंवागः॥ य
 ह्निद्रवदनयलाः। रासयानिः॥ नृमानायाः। तदवासवमानुयानः॥ कम्पयानिः॥ ली

काकुशयनराक्षसाक्षयाननीलासलकवादवीः सारैरिगिक्वन् ॥ अङ्गन
 क्षाद्यथयः जुहमूयादिनादीने ॥ कानाप्रशमसंयार्कः नानारयसमाकुलः स्या
 द्वादवनामानि सत्त्वालंक्षाद्यदसदा ॥ नाप्रशिष्याम्यदसत्त्वाः नानारयमहादृ
 वान ॥ निननप्रतिमासाकेः गायन्निमुनियुंगवा ॥ कृणांडालिप्रनारुत्वा नन ॥ स्या
 प्रसाधसानाक्षालानघनविश्रुसः ॥ दं वचनमववीन ॥ नामावृष्टानकवृदिः स्या

किञ्चित्कीर्तिर्दशदशमिष्वनेनाथे ॥ वाधिसल्लसदधिके ॥ सर्वपायद्वयं पृथं माङ्ग
 न्यीकिञ्चिद्वर्धनं ॥ धनधान्यकर्तृत्वेव ॥ आशीर्ग्यपृष्टिर्वर्धनं ॥ आयुषामायजननं सर्व
 सलसल्ववर्दं ॥ लक्ष्मीणीसम्यक्त्वेव ॥ सर्वसल्ववीव धनं मेनी ॥ गालेयसत्त्वानां गले
 र्दयमहासूने ॥ प्रयं मुकुरुवावाप्यदसन्नवत्ताकि ॥ न ॥ वृवत्तायादि ॥ स ॥ स ॥ मी
 आरुलक्ष्यादृष्या ॥ दक्षिणकलमृदृष्य ॥ पृथ्वीलक्ष्मीदमहीकं ॥ नमूवाचमहापा ॥ ४ साधु

महाकपयनामान् ॥ १ ॥ सुमहात्मनः सर्वसत्त्वकत्तमः ॥ यानि संकीर्त्यमानाः सस्यकाः स्य
धनेभ्यः ॥ सर्वथाधिनिमुक्ताः सर्वेभ्यः गुणान्विताः ॥ जयलमृन्निदृग्वायुना
यानि सत्त्वावनी ॥ नामाहं संप्रवक्ष्यामि देवसंघाट ॥ १ ॥ अथ मत्पुत्रमादध्यामीत चारु
विद्याभिन्नसंज्ञायाम् ॥ २ ॥ अचनसूलाचनः नायकायाः सर्वसत्त्वानुकोपिनिः सर्वसत्त्वात्
विद्विषासहस्रं ॥ ३ ॥ अहमुननो ॥ ४ ॥ नभारुगवनी ॥ ५ ॥ अत्र साकय ॥ ६ ॥ मांसस्य सत्त्वाना ॥ ७ ॥ इहं

६ ॥ इहं ॥ ७ ॥ इहं ॥ ८ ॥ इहं ॥ ९ ॥ इहं ॥ १० ॥ इहं ॥ ११ ॥ इहं ॥ १२ ॥ इहं ॥ १३ ॥ इहं ॥ १४ ॥ इहं ॥ १५ ॥ इहं ॥ १६ ॥ इहं ॥ १७ ॥ इहं ॥ १८ ॥ इहं ॥ १९ ॥ इहं ॥ २० ॥ इहं ॥ २१ ॥ इहं ॥ २२ ॥ इहं ॥ २३ ॥ इहं ॥ २४ ॥ इहं ॥ २५ ॥ इहं ॥ २६ ॥ इहं ॥ २७ ॥ इहं ॥ २८ ॥ इहं ॥ २९ ॥ इहं ॥ ३० ॥ इहं ॥ ३१ ॥ इहं ॥ ३२ ॥ इहं ॥ ३३ ॥ इहं ॥ ३४ ॥ इहं ॥ ३५ ॥ इहं ॥ ३६ ॥ इहं ॥ ३७ ॥ इहं ॥ ३८ ॥ इहं ॥ ३९ ॥ इहं ॥ ४० ॥ इहं ॥ ४१ ॥ इहं ॥ ४२ ॥ इहं ॥ ४३ ॥ इहं ॥ ४४ ॥ इहं ॥ ४५ ॥ इहं ॥ ४६ ॥ इहं ॥ ४७ ॥ इहं ॥ ४८ ॥ इहं ॥ ४९ ॥ इहं ॥ ५० ॥ इहं ॥ ५१ ॥ इहं ॥ ५२ ॥ इहं ॥ ५३ ॥ इहं ॥ ५४ ॥ इहं ॥ ५५ ॥ इहं ॥ ५६ ॥ इहं ॥ ५७ ॥ इहं ॥ ५८ ॥ इहं ॥ ५९ ॥ इहं ॥ ६० ॥ इहं ॥ ६१ ॥ इहं ॥ ६२ ॥ इहं ॥ ६३ ॥ इहं ॥ ६४ ॥ इहं ॥ ६५ ॥ इहं ॥ ६६ ॥ इहं ॥ ६७ ॥ इहं ॥ ६८ ॥ इहं ॥ ६९ ॥ इहं ॥ ७० ॥ इहं ॥ ७१ ॥ इहं ॥ ७२ ॥ इहं ॥ ७३ ॥ इहं ॥ ७४ ॥ इहं ॥ ७५ ॥ इहं ॥ ७६ ॥ इहं ॥ ७७ ॥ इहं ॥ ७८ ॥ इहं ॥ ७९ ॥ इहं ॥ ८० ॥ इहं ॥ ८१ ॥ इहं ॥ ८२ ॥ इहं ॥ ८३ ॥ इहं ॥ ८४ ॥ इहं ॥ ८५ ॥ इहं ॥ ८६ ॥ इहं ॥ ८७ ॥ इहं ॥ ८८ ॥ इहं ॥ ८९ ॥ इहं ॥ ९० ॥ इहं ॥ ९१ ॥ इहं ॥ ९२ ॥ इहं ॥ ९३ ॥ इहं ॥ ९४ ॥ इहं ॥ ९५ ॥ इहं ॥ ९६ ॥ इहं ॥ ९७ ॥ इहं ॥ ९८ ॥ इहं ॥ ९९ ॥ इहं ॥ १०० ॥ इहं ॥

नीपुर्ण विद्यानां प्रियं ददाति चिदानना सदा रोमी । अदिना र्थकवा नामा सदा माय
सदा र्थेना सदा वनपना दमा सदा रोमी । सदा च धु इह सखी न संदयी । यत्नका नाम
नयना भव विद्याया दसप श विद्युत्मा ली धु डार वरु चकी वार्या दूरा पुष्पा । डारु निरु
रुनी काली काल रागी निजा वरी । वरु डी माद डी गणा काका यादा विधी चरु वाक्का डी
वदमाना चरु मा रागु च वा सिमी । माक त्या भाकनी सो म्या । जान वदमनी दवा काया सि

निमसा वगा संध्या सत्वापरा दिना । साथ वाद कृपा वृष्टि नष्ट मार्ज पद र्शनी । वय यसा
सनी र्गानी सुप्रया मृत विकसा र्ग वरी या नि नि सि द्या । च धु ली चामुका धु वा । ध म्या पु
न्या सदा र्गना । सुरु ग प्रिय द र्शना । कृता मं ना सिनी ली मा । डग डग म द क या डग द
कदिनी दूका र्ग न द्या र्ग कि वत्सला । वा नी चरी सि वा गू र्ग । नि त्या सर्व क मा नू गा । स
वार्थ साधनी र्गुडा । र्ग फी धा नी धन डया । जूरु या र्ग न मी पुष्पा । डी म झा क र्ग वा र्ग द्या र्ग

वामरु वानरु सर्वासाययीयती॥ ॥ ईकायकृपावलवन से द्यायकडावडीय
 सादायनामा द्युतयशर्मा द्युतयल्लिना दितकामया चदस्यसमस्तुयु द्युतय द्युतयनामपिद
 द्युतय ॥ साह ग्यस्यग्यकयती सर्वाकितियनगर्ज सतक्याधिपुनमर्मा सवसत्सुखवद
 कि० कालय० ० धीमान् शुचि० स्नान समादिन० ॥ इति० वि० होवकालन या द्युतियम
 वापनयान् ॥ इति० शिवकाल सतिनिर्वा दयिद्यधनवान् रुवन् सति० अमसकठइति० ना

५

नाहयसमुद्रि नोस्मन्मवनामानि सर्वरुयमयाहनि नाकालमरुयमपनि पादुया
 विपुलं गारा० स्नानयस रुतं द्युतय कथे कथमसमान० यत्पादं पादन् थायमानव० कि
 रुयिथेकि सदयिकितानमायुमान् हीयावलरुननव० दवानागासुयायका० शगचव०
 कठपुतना० पीठावायक्रासा रुनामलु रो नीडं डं माह्याकि द्यासाका० यनालयात्मा
 दासहायमानथा द्यायायमानका० इति० द्युतयाकारवाद्दय० इति० गजविचका० यका० यका०

श्री इह संवत् १८८५ मयि नवमि किं पुनरुक्तं विदुः ॥ इह संवत् १८८५ मयि नवमि
कामनिच देवा मया यि संयुक्तं स मनुजं नमो महर्षि कृष्ण लोचनं यत्तु होयुक्तं यत्तु
मन्त्रं ववधते ॥ जानि स्यात्तु तं दीमान् दुर्लभं यत्तु किं यान् मन्त्रा वाग्मी सवर्गं सुविधा ॥ श्री
दशकस्या समिसंदवी ताधि चिरं विरु विही ॥ सदा विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु
विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु विरु

धर्मरत्न बजाकार्य सुरत श्री महाविहार

II-8